

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया के प्रेमचंद आर्काइव्स एंड लिटरेरी सेंटर ने महात्मा गांधी एंड हिज़ एन्ड्यूरिंग रिलेशनशिप विद जामिया मिल्लिया इस्लामिया पर व्याख्यान किया आयोजित

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर, 2026

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (JMI) के प्रेमचंद आर्काइव्स एंड लिटरेरी सेंटर (JPALC) ने 5 अक्टूबर, 2026 को JPALC में 'महात्मा गांधी एंड एन्ड्यूरिंग रिलेशनशिप विद जामिया मिल्लिया इस्लामिया' विषय पर एक व्याख्यान आयोजित किया। कार्यक्रम की शुरुआत JPALC के निदेशक प्रो. शहज़ाद अंजुम के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने वक्ता, अध्यक्ष, सम्मानित अतिथियों, विद्वानों, फैकल्टी सदस्यों, छात्रों और सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने जामिया की शुरुआत से ही गांधीजी के साथ इसके संबंधों की विस्तृत पृष्ठभूमि बताई। उन्होंने साल भर सेंटर की शैक्षणिक गतिविधियों और कार्यक्रमों पर भी प्रकाश डाला।

इस अवसर पर, प्रो. शहज़ाद अंजुम ने जामिया के कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ़ और रजिस्ट्रार प्रो. मो. महताब आलम रिज़वी को जामिया में, विशेष रूप से आर्काइव्स में ऐसी शैक्षणिक गतिविधियों के लिए उनके उदार सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। ये गतिविधियाँ विद्वानों, फैकल्टी सदस्यों और छात्रों के बीच शोध, बहस और चर्चा के स्तर को बढ़ाने और विश्वविद्यालय में शैक्षणिक और साहित्यिक माहौल को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने जामिया की DSW (डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर) प्रो. नीलोफ़र अफ़ज़ल का भी धन्यवाद किया।

वक्ता, प्रो. मोहम्मद अलीम (ए.एम. ख्वाजा चेरर प्रोफेसर, इतिहास और संस्कृति विभाग, जेएमआई) ने महात्मा गांधी और जेएमआई के बीच संबंधों का बहुत विस्तृत और गहन विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि 1920 के दशक में जामिया की स्थापना में गांधीजी एक प्रेरणा और मार्गदर्शक थे। उन्होंने कहा कि वे जामिया की शैक्षिक यात्रा में मार्गदर्शक शक्ति थे। उन्होंने 20वीं सदी के शुरुआती दौर में इसके दायरे, महत्व और असर के बारे में भी बताया। उन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना और शुरू से लेकर अब तक शिक्षा के क्षेत्र में इसके योगदान पर खास ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि यह एक आंदोलन के भीतर एक और आंदोलन था। उन्होंने दर्शकों को बताया कि कैसे जामिया के संस्थापकों ने गांधीजी के आशीर्वाद से जामिया की तरक्की और विकास के लिए कदम-दर-कदम अहम भूमिका निभाई।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जेएमआई के फैकल्टी ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड लैंग्वेज के डीन, प्रोफ़ेसर इक़्तिदार मोहम्मद खान ने की। उन्होंने जामिया के दूसरे संस्थापकों के साथ मौलाना मोहम्मद अली की भूमिका और भारतीयों को शिक्षित करने के लिए शुरू किए गए आंदोलन को सफल बनाने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा लोगों का समर्थन जुटाने की उनकी कोशिशों पर रोशनी डाली। जामिया के योगदान पर उनकी बातें इतिहास के सबक पर आधारित और सोचने पर मजबूर करने वाली थीं।

जेएमआई के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नीरज कुमार ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर अपनी बात रखते हुए गांधीजी, उनकी शिक्षाओं और उनकी किताब "माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ" (सत्य के साथ मेरे प्रयोग) के दर्शन पर ज़ोर दिया। उन्होंने भारत और विदेशों में पूरे शैक्षिक आंदोलन पर इसके असर के बारे में भी बताया। उन्होंने गांधीजी और जामिया के बीच गहरे रिश्ते के बारे में भी बात की।

कार्यक्रम के अंत में, आर्काइव्स के डायरेक्टर प्रोफ़ेसर शहज़ाद अंजुम ने वक्ता प्रोफ़ेसर मोहम्मद अलीम, अध्यक्ष प्रोफ़ेसर इक़्तिदार मोहम्मद खान और विशिष्ट अतिथि प्रोफ़ेसर नीरज कुमार का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन JPALC की असिस्टेंट आर्काइविस्ट सुश्री श्रद्धा शंकर ने किया। कार्यक्रम का समापन JPALC की कंज़र्वेशनलिस्ट सुश्री नूरजहाँ के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र शामिल हुए।

प्रोफ़ेसर साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी